



CHETANA
International Journal of Education (CIJE)

Peer Reviewed/Refereed Journal
ISSN : 2455-8279 (E)/2231-3613 (P)

Impact Factor
SJIF 2026-8.584



Prof. A.P. Sharma
Founder Editor, CIJE
(25.12.1932 - 09.01.2019)

भारतीय विदेश नीति एवं वैश्विक मंचों पर बढ़ती भूमिका: एक सैद्धांतिक एवं विश्लेषणात्मक अध्ययन

कान्ता सैनी
शोधार्थी

डॉ प्रीति वर्मा

एसोसिएट प्रोफेसर

महर्षि अरविन्द विश्वविद्यालय, जयपुर

Email-anandksaini@gmail.com, Mobile- 9772200270

Email-pritee613@gmail.com, Mobile-7665744274

First draft received: 07.02.2026, Reviewed: 09.02.2026

Final proof received: 11.02.2026, Accepted: 15.02.2026

शोध-सारांश

21वीं सदी में वैश्विक शक्ति-संतुलन में तीव्र परिवर्तन, बहुध्रुवीयता का उदय, आर्थिक परस्पर निर्भरता, जलवायु संकट और सामरिक प्रतिस्पर्धा ने अंतरराष्ट्रीय संबंधों की प्रकृति को पुनर्परिभाषित किया है। इस परिप्रेक्ष्य में भारत की विदेश नीति ने "गुटनिरपेक्षता" से "रणनीतिक स्वायत्तता" तथा "बहु-संरेखण" की ओर संक्रमण किया है। भारतीय विदेश नीति अब वैचारिक तटस्थता से हटकर 'इंडिया फ्रंट' (भारत प्रथम) और यथार्थवादी सक्रियता की ओर बढ़ी है, जो रणनीतिक स्वायत्तता, आर्थिक विकास और "विश्वबंधु" के रूप में वैश्विक मंचों पर नेतृत्व (जैसे G20, ग्लोबल साउथ) पर केंद्रित है। यह नीति अब सुरक्षा, तकनीक (DPI), और जलवायु परिवर्तन जैसे मुद्दों पर स्वतंत्र व कठोर निर्णय लेने में सक्षम है, जो इसे बहुध्रुवीय विश्व में एक प्रमुख शक्ति बना रही है।

यह शोध गुणात्मक-विश्लेषणात्मक पद्धति पर आधारित है। इसमें आधिकारिक दस्तावेज़, नीति वक्तव्य, शिखर सम्मेलन घोषणाएँ, और विद्वानों के लेखों का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है।

निष्कर्षतः, भारत आज वैश्विक शासन, आर्थिक कूटनीति, जलवायु नेतृत्व और सामरिक संतुलन के क्षेत्र में एक उभरती निर्णायक शक्ति के रूप में स्थापित हो रहा है।

मुख्य शब्द : रणनीतिक स्वायत्तता, बहु-संरेखण, वैश्विक दक्षिण, बहुध्रुवीयता, सॉफ्ट पावर, आर्थिक कूटनीति.

Introduction

प्रस्तावना

अध्ययन की पृष्ठभूमि

शीत युद्ध की समाप्ति के पश्चात अंतरराष्ट्रीय व्यवस्था में एकध्रुवीयता का उदय हुआ, जिसका नेतृत्व संयुक्त राज्य अमेरिका ने किया। किंतु 21वीं सदी में चीन के उदय, रूस के पुनरुत्थान तथा क्षेत्रीय शक्तियों के सशक्तिकरण ने वैश्विक व्यवस्था को बहुध्रुवीय दिशा में अग्रसर किया।

भारत ने इस परिवर्तित परिदृश्य में अपनी विदेश नीति को सक्रिय, संतुलित और परिणामोन्मुख बनाया है। जिसके परिणामस्वरूप कुछ प्रश्न हमारे सम्मुख आये जिनका परिणाम जानने के लिए यह शोध किया गया।

शोध प्रश्न

- क्या भारत की विदेश नीति में वैचारिक निरंतरता और व्यावहारिक परिवर्तन का समन्वय है?
- वैश्विक मंचों पर भारत की भूमिका किस प्रकार सुदृढ़ हुई है?

- क्या "रणनीतिक स्वायत्तता" बहुध्रुवीय विश्व में प्रभावी रणनीति सिद्ध हो रही है?

सैद्धांतिक ढाँचा - भारतीय विदेश नीति 'वसुधैव कुटुंबकम' (विश्व एक परिवार है), 'इंडिया फ्रंट' और सक्रिय बहुपक्षवाद के सैद्धांतिक ढाँचे पर आधारित है, जो राष्ट्रीय सुरक्षा, आर्थिक विकास और वैश्विक शांति को प्राथमिकता देती है। वर्तमान में, भारत गुटनिरपेक्षता से बहु-संरेखण (Multi-alignment) की ओर बढ़ते हुए, जी-20, ब्रिक्स और वैश्विक दक्षिण (Global South) की आवाज़ के रूप में वैश्विक शासन में एक अग्रणी शक्ति बनकर उभरा है।

यथार्थवाद - भारतीय विदेश नीति आदर्शवाद से यथार्थवाद (Realism) की ओर परिवर्तित होकर, अब 'इंडिया फ्रंट' (राष्ट्रहित सर्वोपरि), बहु-संरेखण (Multi-alignment) और सक्रिय कूटनीति पर केंद्रित है। वैश्विक मंचों पर भारत की बढ़ती भूमिका अब शक्ति, सुरक्षा और आर्थिक हितों को प्रधानता देती है, जो चीन-अमेरिका के बीच संतुलन और स्वतंत्र निर्णय लेने की क्षमता को दर्शाता है। यथार्थवाद शक्ति और राष्ट्रीय हित को प्राथमिकता देता है। भारत का रक्षा सुदृढ़ीकरण और सामरिक साझेदारियाँ इसी दृष्टिकोण का उदाहरण हैं।

उदार संस्थागतवाद - भारतीय विदेश नीति उदार संस्थागतवाद (Liberal Institutionalism) के ढांचे के तहत वैश्विक मंचों पर एक जिम्मेदार शक्ति के रूप में उभर रही है। यह सिद्धांत अंतरराष्ट्रीय सहयोग, बहुपक्षीय संस्थानों (जैसे UNSC, WTO) और नियम-आधारित व्यवस्था को बढ़ावा देता है, जहाँ भारत जलवायु परिवर्तन, आतंकवाद, और सतत विकास जैसे मुद्दों पर एक 'विश्व-बंधु' (World Brother) के रूप में अग्रणी भूमिका निभा रहा है। भारत बहुपक्षीय संस्थाओं—जैसे United Nations, G20, BRICS—के माध्यम से वैश्विक शासन में भागीदारी करता है।

संरचनावाद - भारतीय विदेश नीति गुटनिरपेक्षता के आदर्शवाद से यथार्थवादी "विश्वबंधु" दृष्टिकोण की ओर विकसित हुई है, जो अब G20, BRICS और QUAD जैसे मंचों के माध्यम से राष्ट्रीय हितों (ऊर्जा, सुरक्षा) की रक्षा और वैश्विक दक्षिण (Global South) का नेतृत्व कर रही है। इसका सैद्धांतिक ढाँचा पंचशील, स्वायत्तता और बहुध्रुवीय विश्व की वकालत पर टिका है, जो अब संरचनावादी रूप से विश्व व्यवस्था में सुधार की मांग करता है। भारत की पहचान एक लोकतांत्रिक, बहुलतावादी और विकासोन्मुख राष्ट्र के रूप में उसकी विदेश नीति को प्रभावित करती है।

ऐतिहासिक विकास - भारतीय विदेश नीति गुटनिरपेक्षता से व्यावहारिक यथार्थवाद (Pragmatic Realism) की ओर विकसित हुई है, जो अब 'विश्वबंधु' और एक प्रमुख वैश्विक शक्ति (Leading Power) के रूप में भारत की भूमिका को रेखांकित करती है। ऐतिहासिक रूप से नेहरूवादी आदर्शवाद से शुरू होकर, यह नीति आज जी-20, क्वाड और ब्रिक्स जैसे मंचों पर आर्थिक सुरक्षा और रणनीतिक स्वायत्तता पर केंद्रित है। भारतीय विदेश नीति का ऐतिहासिक विकासक्रम

स्वतंत्रता के बाद (1947-1960 के दशक): प्रथम प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू ने गुटनिरपेक्ष आंदोलन (NAM) की नींव रखी, जिसका उद्देश्य शीत युद्ध के शक्ति गुटों से अलग रहकर स्वतंत्र विदेश नीति अपनाना और उपनिवेशवाद का विरोध करना था।

यथार्थवाद की ओर बदलाव (1970-1990 का दशक): 1962, 1965 और 1971 के युद्धों के बाद, नीति में आदर्शवाद के साथ-साथ व्यावहारिक यथार्थवाद (जैसे 1971 का भारत-सोवियत समझौता) का मिश्रण आया, जो राष्ट्रीय सुरक्षा को प्राथमिकता देता था।

आर्थिक कूटनीति (1991 के बाद): शीत युद्ध की समाप्ति और आर्थिक उदारीकरण के बाद, नीति का फोकस आर्थिक विकास, विदेशी निवेश और 'लुक ईस्ट' (अब एक्ट ईस्ट) नीति पर शिफ्ट हुआ।

रणनीतिक स्वायत्तता और प्रमुख शक्ति (21वीं सदी): 2014 के बाद से, नीति अधिक मुखर हुई है, जिसमें 'नेबरहुड फर्स्ट', 'वैश्विक दक्षिण (Global South)' की आवाज बनने और बहु-संरेखण (multi-alignment) पर जोर दिया गया है।

वैश्विक मंचों पर बढ़ती भूमिका

संयुक्त राष्ट्र - भारत शांति स्थापना अभियानों में प्रमुख योगदानकर्ता है। भारत ने संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद (UNSC) में स्थायी सदस्यता के लिए अपनी दावेदारी मजबूत की है और विकासशील देशों के हितों का प्रतिनिधित्व किया है। सुरक्षा परिषद में स्थायी सदस्यता हेतु भारत की दावेदारी उसकी बढ़ती वैश्विक भूमिका को दर्शाती है।

G20 नेतृत्व - भारतीय विदेश नीति ने G20 की सफल अध्यक्षता (2023) के माध्यम से अपनी "वसुधैव कुटुंबकम्" (एक पृथ्वी, एक परिवार, एक भविष्य) विचारधारा को सिद्ध करते हुए वैश्विक दक्षिण (Global South) की आवाज के रूप में खुद को स्थापित किया है। भारत की यह भूमिका कूटनीतिक संतुलन, आर्थिक शक्ति और सॉफ्ट पावर के प्रसार के साथ, बहुपक्षीय मंचों पर एक निर्णायक वैश्विक

नेता की पहचान को मजबूत करती है। G20 की अध्यक्षता के दौरान भारत ने "वसुधैव कुटुंबकम्" थीम के माध्यम से वैश्विक दक्षिण की आवाज को प्रमुखता दी।

इंडो-पैसिफिक और क्वाड - इंडो-पैसिफिक में भारत SAGAR नीति के माध्यम से स्थिरता और क्वाड (Quad) के माध्यम से एक स्वतंत्र, खुला क्षेत्र बनाए रखने में प्रमुख भूमिका निभा रहा है। यह नीति रणनीतिक स्वायत्तता, चीन का संतुलन और साझेदारी को बढ़ावा देती है। Quadrilateral Security Dialogue के माध्यम से भारत समुद्री सुरक्षा और मुक्त व्यापार मार्गों का समर्थन करता है।

BRICS - 21वीं सदी में वैश्विक शक्ति-संतुलन में परिवर्तन के साथ उभरती अर्थव्यवस्थाओं ने अंतरराष्ट्रीय राजनीति और अर्थव्यवस्था में अपनी भूमिका सुदृढ़ की है। BRICS (ब्राज़ील, रूस, भारत, चीन और दक्षिण अफ्रीका) ऐसा ही एक बहुपक्षीय मंच है, जिसने पश्चिम-प्रधान वैश्विक व्यवस्था के विकल्प के रूप में अपनी पहचान बनाई है। भारत इस समूह का संस्थापक सदस्य होने के नाते इसकी दिशा, प्राथमिकताओं और एजेंडा-निर्धारण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता रहा है। BRICS मंच भारत को वैकल्पिक वित्तीय संरचनाओं में भूमिका प्रदान करता है।

आर्थिक और जलवायु कूटनीति - 21वीं सदी में वैश्विक व्यवस्था केवल सैन्य शक्ति से नहीं, बल्कि आर्थिक प्रभाव, तकनीकी क्षमता और जलवायु नेतृत्व से भी निर्धारित होती है। भारत ने अपनी विदेश नीति में आर्थिक कूटनीति और जलवायु कूटनीति को प्रमुख स्तंभ के रूप में स्थापित किया है। यह परिवर्तन 1991 के आर्थिक उदारीकरण के बाद और अधिक स्पष्ट हुआ, जब भारत ने वैश्विक अर्थव्यवस्था से सक्रिय रूप से जुड़ना प्रारंभ किया।

आर्थिक कूटनीति - आर्थिक कूटनीति वह प्रक्रिया है जिसके माध्यम से कोई राष्ट्र व्यापार, निवेश, प्रौद्योगिकी और वित्तीय सहयोग के जरिए अपने राष्ट्रीय हितों को साधता है। भारत की आर्थिक कूटनीति के उद्देश्य: विदेशी निवेश आकर्षित करना, निर्यात बढ़ाना, ऊर्जा और संसाधन सुरक्षा, वैश्विक आपूर्ति श्रृंखला में भागीदारी को मजबूत करना है। भारत वैश्विक आपूर्ति श्रृंखला विविधीकरण, डिजिटल अर्थव्यवस्था और निवेश सहयोग पर बल दे रहा है।

जलवायु नेतृत्व - 21वीं सदी में जलवायु परिवर्तन वैश्विक राजनीति और अर्थव्यवस्था का केंद्रीय प्रश्न बन चुका है। बढ़ते तापमान, चरम मौसमी घटनाएँ, समुद्र-स्तर वृद्धि और खाद्य-सुरक्षा संकट ने अंतरराष्ट्रीय सहयोग की आवश्यकता को तीव्र किया है। इस संदर्भ में भारत ने स्वयं को एक जिम्मेदार, विकासोन्मुख और न्याय-आधारित जलवायु नेतृत्वकर्ता के रूप में स्थापित करने का प्रयास किया है। जलवायु परिवर्तन 21वीं सदी की सबसे बड़ी वैश्विक चुनौती है। भारत, जो एक विकासशील देश है, विकास और पर्यावरण के बीच संतुलन स्थापित करने का प्रयास कर रहा है। भारत ने पेरिस समझौते के लक्ष्यों के प्रति प्रतिबद्धता जताई। अंतरराष्ट्रीय सौर गठबंधन जैसी पहलें भारत की नेतृत्वकारी भूमिका को दर्शाती हैं।

डेटा विश्लेषण

वर्ष	G20 सहभागिता	UN शांति सैनिक योगदान	व्यापार वृद्धि (%)
2010	सक्रिय	उच्च	8%
2015	विस्तारित	उच्च	7%
2023	अध्यक्षता	निरंतर	9%

आलोचनात्मक मूल्यांकन - भारत की विदेश नीति अब “नैतिक आदर्शवाद” से अधिक “व्यावहारिक यथार्थवाद” की ओर उन्मुख है। भारत वैश्विक शासन (Global Governance) में एक महत्वपूर्ण खिलाड़ी के रूप में उभरा है, जो समावेशी और बहुध्रुवीय विश्व की वकालत करता है। हालाँकि, चीन के बढ़ते खतरे और पड़ोसी देशों में कूटनीतिक चुनौतियों से निपटने के लिए भारत को अपनी 'आर्थिक-सुरक्षा' नीतियों को और अधिक मजबूत करने की आवश्यकता है, ताकि वह वैश्विक मंच पर एक संतुलित और प्रभावी शक्ति बना रहे।

बहुध्रुवीय विश्व में संतुलित नीति - 21वीं सदी में अंतरराष्ट्रीय व्यवस्था एकध्रुवीयता से बहुध्रुवीयता की ओर अग्रसर है। संयुक्त राज्य अमेरिका, चीन, रूस और यूरोपीय संघ जैसे शक्ति-केंद्र वैश्विक राजनीति को बहुस्तरीय बना रहे हैं। इस परिवर्तित परिदृश्य में भारत ने “संतुलित नीति” (Balanced Policy) या “रणनीतिक स्वायत्तता” को अपनी विदेश नीति का मूल आधार बनाया है।

वैश्विक दक्षिण का नेतृत्व- अंतरराष्ट्रीय राजनीति में “वैश्विक दक्षिण” (Global South) की अवधारणा पुनः प्रासंगिक हो गई है। यह शब्द एशिया, अफ्रीका और लैटिन अमेरिका के उन विकासशील देशों को संदर्भित करता है, जो औपनिवेशिक इतिहास, आर्थिक असमानता और वैश्विक शासन में सीमित प्रतिनिधित्व जैसी समान चुनौतियों का सामना करते रहे हैं। भारत ने स्वयं को वैश्विक दक्षिण की आवाज़ और नेतृत्वकर्ता के रूप में प्रस्तुत करने का प्रयास किया है।

ऊर्जा निर्भरता - ऊर्जा किसी भी आधुनिक अर्थव्यवस्था की आधारशिला है। तीव्र औद्योगिकीकरण, शहरीकरण और जनसंख्या वृद्धि के कारण भारत की ऊर्जा मांग निरंतर बढ़ रही है। किंतु घरेलू संसाधनों की सीमित उपलब्धता के कारण भारत को तेल, गैस और कुछ हद तक कोयले के आयात पर निर्भर रहना पड़ता है। यही स्थिति “ऊर्जा निर्भरता” (Energy Dependence) कहलाती है, जो भारत की विदेश नीति और आर्थिक स्थिरता दोनों को प्रभावित करती है।

भारत की विदेश नीति अब “नैतिक आदर्शवाद” से अधिक “व्यावहारिक यथार्थवाद” की ओर उन्मुख है।

निष्कर्ष - भारतीय विदेश नीति गुटनिरपेक्षता के आदर्शवाद से निकलकर 'बहु-संरेखण' (multi-alignment) और व्यावहारिक यथार्थवाद की ओर विकसित हुई है। आज भारत, G20 की अध्यक्षता, क्वाड (QUAD), और ग्लोबल साउथ की आवाज़ बनकर वैश्विक मंचों पर एक निर्णायक शक्ति के रूप में उभरा है। रक्षा, आर्थिक आत्मनिर्भरता (आत्मनिर्भर भारत), और सामरिक स्वायत्तता को प्राथमिकता देते हुए, भारत एक संतुलित और आत्मविश्वासपूर्ण 'विश्वमित्र' के रूप में अपनी संप्रभुता को सुरक्षित रखते हुए वैश्विक चुनौतियों का सामना कर रहा है। भारत आज वैश्विक मंचों पर एक उभरती शक्ति के रूप में स्थापित हो चुका है। रणनीतिक स्वायत्तता और बहु-संरेखण ने उसे महाशक्तियों के बीच संतुलन स्थापित करने में सक्षम बनाया है।

संक्षेप में वर्तमान भारतीय विदेश नीति आत्मविश्वास से भरी हुई, लचीली और परिणाम-उन्मुख (Result-oriented) है जो राष्ट्रीय सुरक्षा और विकास को प्राथमिकता देती है।

संदर्भ सूची

- United Nations Annual Reports
- G20 Leaders' Declarations
- BRICS Summit Documents
- Jaishankar, S. (2020). *The India Way*.
- Tharoor, S. (2012). *Pax Indica*.

- MEA Annual Reports
- WTO Trade Statistics
- World Bank Development Indicators
- SIPRI Military Expenditure Database
- UNDP Human Development Reports